केंद्रीय विद्यालय पुलगांव कैंप
कला और शिल्प अभ्यास कार्यान्वयन रिपोर्ट

परिचय-

कला और शिल्प शिक्षा छात्रों में रचनात्मकता, नवाचार और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देने के लिए अभिन्न अंग है। केंद्रीय विद्यालय पुलगांव कैंप में, एक संरचित और समृद्ध कला और शिल्प अभ्यास के कार्यान्वयन का उद्देश्य छात्रों को व्यावहारिक, रचनात्मक अनुभव प्रदान करना है जो अकादमिक सीखने के पूरक हैं। केवी पुलगांव कैंप में कला शिक्षा छात्रों के रचनात्मक कौशल, मोटर विकास और सांस्कृतिक जागरूकता को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करती है जबकि उनके समग्र संज्ञानात्मक विकास में योगदान देती है।

यह रिपोर्ट केंद्रीय विद्यालय पुलगांव कैंप में लागू की गई कला और शिल्प अभ्यास की रणनीतियों, गतिविधियों, चुनौतियों और परिणामों की रूपरेखा प्रस्तुत करती है। स्कूल ने कला शिक्षा के महत्व को पहचाना है और छात्रों की रचनात्मक और कलात्मक प्रतिभाओं को विकसित करने के लिए इसे पाठ्यक्रम में शामिल किया है।

उद्देश्य-

केंद्रीय विद्यालय पुलगांव कैंप में कला और शिल्प कार्यक्रम के कार्यान्वयन के पीछे प्राथमिक उद्देश्य शामिल हैं:

1. रचनात्मकता को बढ़ावा देना: छात्रों को अपनी रचनात्मक क्षमता का पता लगाने और कला और शिल्प गतिविधियों के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करना।

2. मोटर कौशल का विकास: कटिंग, पेस्टिंग, फोल्डिंग, ड्राइंग और मॉडलिंग जैसे शिल्प कार्यों के माध्यम से छात्रों के बढ़िया मोटर कौशल, हाथ-आंख समन्वय और निपुणता को बढ़ाना।

3. सांस्कृतिक प्रशंसा: छात्रों को कला के पारंपरिक और समकालीन रूपों से परिचित कराना, इस प्रकार भारत की समृद्ध कलात्मक विरासत में सांस्कृतिक जागरूकता और गर्व को बढ़ावा देना।

4. आत्म-अभिव्यक्ति को बढ़ावा देना: छात्रों को कला के विभिन्न रूपों के माध्यम से अपने विचारों, भावनाओं और व्यक्तित्व को व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान करना।

5. आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना: छात्रों को ऐसी कला परियोजनाओं में शामिल करना जिनमें समस्या-समाधान, आलोचनात्मक सोच और नवीन दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

6. सहयोग को प्रोत्साहित करना: समूह कला परियोजनाओं और सहयोगी रचनात्मक कार्यों के माध्यम से टीमवर्क और संचार कौशल को बढ़ावा देना।

कला और शिल्प अभ्यास

केंद्रीय विद्यालय पुलगांव कैंप में कला और शिल्प के कार्यान्वयन में एक अच्छी तरह से संरचित दृष्टिकोण शामिल है जिसे स्कूल की समय सारिणी में एकीकृत किया गया है। विभिन्न ग्रेड स्तरों के सभी छात्रों को कला शिक्षा प्रदान की जाती है, जिसमें उनकी रचनात्मक कौशल को बढ़ाने के लिए आयु-उपयुक्त गतिविधियाँ

डिज़ाइन की जाती हैं। निम्नलिखित अनुभाग इस कार्यान्वयन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हैं।

1. कला और शिल्प का पाठ्यक्रम - एकीकरण

कला और शिल्प पाठ्यक्रम रचनात्मकता को पोषित करते हुए अकादमिक पाठ्यक्रम को पूरक बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। कला पाठ्यक्रम केंद्रीय विद्यालय संगठन (**KVS)** द्वारा प्रदान किए गए दिशा-निर्देशों के अनुरूप है और इसमें पारंपरिक भारतीय कला रूप, समकालीन शिल्प और नवीन कलात्मक तकनीकें शामिल हैं।

पाठ्यक्रम के प्रमुख तत्वों में शामिल हैं:

- ललित कला: दृश्य कला में छात्रों के कौशल को विकसित करने के लिए ड्राइंग, पेंटिंग, स्केचिंग और रंग भरना सिखाया जाता है। छायांकन, परिप्रेक्ष्य ड्राइंग और रंग सिद्धांत जैसी तकनीकों को उच्च ग्रेड स्तरों पर पेश किया जाता है।

- शिल्प कार्य: कागज़ काटने, ओरिगेमी, मिट्टी की मॉडलिंग और कढ़ाई और बुनाई जैसे कपड़ा शिल्प जैसी शिल्प गतिविधियों का नियमित रूप से अभ्यास किया जाता है। ये गतिविधियाँ ठीक मोटर कौशल को बढ़ाने और विवरण पर ध्यान देने के लिए डिज़ाइन की गई हैं।

- सांस्कृतिक कला रूप: छात्रों को मधुबनी पेंटिंग, वारली कला और रंगोली जैसी विभिन्न भारतीय लोक कलाओं से अवगत कराया जाता है, जिससे उन्हें भारत की कलात्मक परंपराओं का पता लगाने का मौका मिलता है।

- पर्यावरण कला: स्कूल पर्यावरण जागरूकता और संधारणीय प्रथाओं को बढ़ावा देते हुए कला परियोजनाओं में पर्यावरण के अनुकूल सामग्रियों और पुनर्चक्रित उत्पादों के उपयोग को प्रोत्साहित करता है।

2. कला कक्षाएं और कार्यशालाएँ

कला और शिल्प शिक्षा साप्ताहिक कला कक्षाओं के माध्यम से दी जाती है, जिसमें प्रत्येक कक्षा एक विशिष्ट कौशल या तकनीक पर ध्यान केंद्रित करती है। छात्रों को पेंट, ब्रश, ड्राइंग पेपर और मिट्टी जैसी सामग्रियों से जोड़ा जाता है, और उन्हें विभिन्न उपकरणों और मीडिया के साथ प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

नियमित कला कक्षाओं के अलावा,
- पोस्टर पेंटिंग: छात्रों ने स्वच्छता, देशभक्ति और एकता जैसे सामाजिक संदेशों के विषयों का उपयोग करके दीवारों पर पोस्टर बनाना सीखा।
- पर्यावरण के अनुकूल शिल्प: समाचार पत्रों, पुराने कपड़े और प्लास्टिक की बोतलों जैसी पुनर्चक्रित सामग्रियों से शिल्प वस्तुओं को बनाने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।
- मूर्तिकला: छात्रों को मिट्टी की मॉडलिंग और मूर्तिकला जैसे त्रि-आयामी कला रूपों से परिचित कराना, उन्हें स्पर्श सीखने का पता लगाने में मदद करना।

3. अन्य विषयों के साथ एकीकरण
कला और शिल्प गतिविधियों को अक्सर बहु-विषयक सीखने का अनुभव बनाने के लिए अन्य शैक्षणिक विषयों के साथ एकीकृत किया जाता है। उदाहरण के लिए:

- गणित: कला के माध्यम से ज्यामितीय आकार, समरूपता और पैटर्न का पता लगाया जाता है, जिससे छात्रों को गणितीय अवधारणाओं को देखने और समझने में मदद मिलती है।
- विज्ञान: पौधों की शारीरिक रचना, पारिस्थितिकी तंत्र और आकाशीय पिंडों जैसे वैज्ञानिक सिद्धांतों को रेखाचित्रों, पेंटिंग और शिल्प मॉडल के माध्यम से दर्शाया जाता है।
- इतिहास: ऐतिहासिक घटनाओं, स्मारकों और संस्कृतियों को कला के माध्यम से चित्रित किया जाता है, जिससे छात्रों को अपने पाठों के साथ दृश्य रूप से जुड़ने की अनुमति मिलती है।

यह अंतर-अनुशासनात्मक दृष्टिकोण छात्रों को उनके पाठों को बेहतर बनाने में मदद करता है।

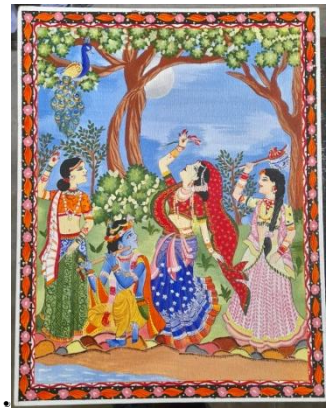

TOPIC - INDIGENOUS TOYS AND GAMES

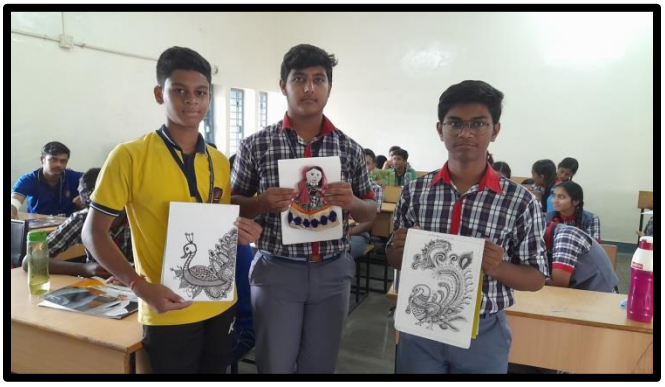

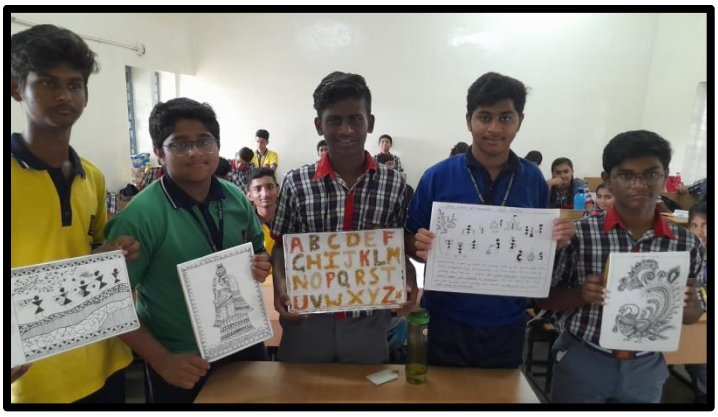
ABCDEF
GHIJKLM
NOPQRST
UVWXYZ

ART ACTIVITIES IN PRIMARY CLASSES